में जनता जो टिकट खरीद कर रेलवे की आमदनी करती है वह यह डिमांड कर सकती है कि जब हम इतना रुपया रेलवेज को देते हैं तो उस के एवज में हम को एफ़िशिएंसी भी मिलनी चाहिये।

दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि रेलवेज के ऊपर जो कुछ खर्च किया जाता है वह तो ठीक किया जाता है लेकिन इनलैंड वाटरवेज की कोस्टल शिपिंग की जब तक तरक्की नहीं होगी तब तक रेलवेज के ऊपर जो बर्डन आज पड़ा हुआ है वह कम नहीं हो सकेगा। कोस्टल शिपिंग की तरक्की कर के हम दरअसल अपनी रेलवेज को हैल्प करेंगे। आज हर एक आदमी यही शिकायत करता है कि रेलों का काम स्लो है और यह भी मानी हुई बात है कि अगर किसी आदमी के ऊपर आप बहुत अधिक बोझा लाद देंगे तो वह चल नहीं सकेगा और वह बैठ जायेगा। आज हमारी रेलों पर बहुत अधिक बोझा हो गया है और जब तक हम उस बोझ को कम नहीं करेंगे तब तक हमारी रेलवेज का इंतजाम ठीक तौर से नहीं हो सकेगा। वह बोझा इस तरीके से कम हो सकता है कि कोस्टल शिपिंग की तरक्की की जाय, इनलैंड वाटरवेज की तरक्की की जाय ताकि कोयला, लोहा और गेहूं हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक तेजी से ढो सकें और ऐसा होने से हमें बहुत सुविधा मिलेगी और रेलवेज के ऊपर जो आज बर्डन है वह किसी क़दर कम हो जायेगा।

17 hrs.

तीसरी बात मुझे यह कहनी है, जैसा कि मूल चन्द जी ने कहा, कि उत्पादन में एग्रिकल्चर के उत्पादन में बहुत कमी पड़ जाती है। यह बात ठीक है। बहुत से स्थानों में यह है कि ट्यूबवेल बनते हैं। लेकिन अगर यह ट्यूबवेल रेलवे लाइनों के बगल में बनते हैं तो दूसरी तरफ पानी के जाने में बहुत दिक्कत पैदा होती है। मैं कहना चाहता हूं कि अभी हमारे क्षेत्र में आप गये थे, हम लोगों ने आप के सामने इसे रक्खा और आप ने बड़ी सहानुभूतिपूर्वक कहा कि इस का इन्तजाम होगा। जहां तक ट्यूबवेल के वास्ते इस पार से उस पार एलेक्ट्रिकल वायर ले जाने की आवश्यकता है, या पुल बनाने की आवश्यकता है, अगर उस में आप अधिक से अधिक सहूलियत देंगे, तो जो रुपया आप देश के बाहर फूड के वास्ते भेजते हैं वह हमारे देश के भीतर ही काम आयेगा।

चौथी बात मुझे यह कहनी है कि हमारे बनारस में आप रेलवे टूल फैक्ट्री बना रहे हैं। उस के वास्ते राष्ट्रपति जी गये और फाउंडेशन स्टोन रक्खा। श्री लाल बहादुर शास्त्री भी गये। उन्होंने कहा कि काश्तकारों के साथ कुछ भी अन्याय नहीं होगा। सरयू प्रसाद जी वहां गये थे, अपोजीशन के लोग भी गये थे। सब लोग थे और उन्होंने देखा, आप को भी आश्चर्य होगा, कि वह एक मिनिस्टर साहब की जमीन है कुछ वर्ष पहले मिनिस्टर साहब अपनी जमीन लगभग २३०० रु० बीघे में बेचते हैं। लेकिन रेलवे ने जब उसी स्थान के समीप ऐक्वायर किया तो १००० या ६०० रु० में लिया।

एक माननीय सदस्य : कहां के मिनिस्टर हैं वह ?

श्री रघुनाथ सिंह : कहीं के मिनिस्टर हों, मैंने तो एग्जाम्पल दी है।

Mr. Speaker: The hon. Member may continue his speech tomorrow.

STATEMENT *RE*: ACCIDENT AT THE FIRING RANGE AT AMBALA

The Deputy Minister of Defence (Sardar Majithia): Government deeply regret to have to inform the House that an Officer, a Junior Commissioned Officer and an Other Rank were

[Sardar Majithia]

killed and a Driver and another Other Rank injured in an explosion which took place in Naraingarh Ranges on the 22nd February 1958 at about 5-30 P.M.

Field firing practice is carried out every year at the above-mentioned range. This time after the firing exercise was over a party consisting of one Officer, one Junior Commissioned Officer and three Other Ranks of a Field Regiment had been detailed, in accordance with the Safety Regulations, to mark out the unexploded shells known as blinds in the Army, in Naraingarh Ranges near Ambala after a firing exercise had taken place. While in the process of marking the blinds, one blind is reported to have exploded resulting in the death of 2nd Lieut. C. A. Pathak, Jemadar Surat Singh, IDSM, and Operator, Wireless Artillery, Sukhcharan Singh and injuries to Driver Chanderbhan, and Operator, Wireless Artillery, Gurcharan Singh.

The next-of-kin of the deceased were informed about the unfortunate accident immediately after its occurrence. Pensionary awards, in accordance with the rules, will be made in favour of the dependents of the deceased personnel promptly.

Government would like to pay their tribute in this House to the deceased Officers and the Other Rank who lost their lives in the course of duty in the service of the country. Although nothing will serve to replace the great grief of the bereaved, the sympathy of the Government and this House will, we hope, in some small measure, help to assuage the feelings of grief of the bereaved and be of some consolation to the fellow officers and men who worked with them and feel their loss very deeply. We also hope that the next-of-kin and others bereaved will find the strength to make the readjustments imposed upon them by this unfortunate accident.

A Court of Enquiry in accordance with established Army Rules has been convened. No further particulars are available at present nor can they be given until the findings of the Court of Enquiry are received.

Mr. Speaker: This accident took place on the 22nd February. As far as possible, unless it occurred late last evening or only this morning, such statements may be made early in the day when the House is full.

Sardar Hukam Singh (Bhatinda): I was told that the hon. Minister had to go somewhere tomorrow.

Mr. Speaker: That is all right. The House now stands adjourned till 11 A.M. tomorrow.

17-04 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Friday, the 28th February, 1958.